200 Years of Hindi Journalism

The first Hindi newspaper of India i.e., Udant Martand, which was first published on 30 May 1826 from Kolkata under the editorship of Yugal Kishore Shukla, regarded as the pioneer editor of Hindi journalism. Published with the objective of serving the interests of Hindi-speaking people, Udant Martand sought to make news and information accessible in the Hindi language at a time when newspapers were primarily available in English, Persian, and Bengali. The title Udant Martand, meaning "The Sun of News," symbolized the role of journalism in spreading awareness and knowledge among the masses.

Although Udant Martand ceased publication on 4 December 1827 due to lack of official patronage, absence of postal distribution facilities, and inadequate public support, it laid the foundation of Hindi journalism in India. Over the last two centuries, Hindi journalism has evolved tremendously in terms of readership, language, subject diversity, printing techniques, and communication technologies. It has played a significant role in creating an informed society and in shaping modern Hindi prose and literary expression.

Many eminent personalities and publications contributed immensely to this journey. Bharatendu Harishchandra pioneered the Hindi renaissance, while Baburao Vishnu Paradkar's enriched Hindi journalistic vocabulary. Acharya Mahavir Prasad Dwivedi standardized Hindi prose through Saraswati, and publications such as Pratap by Ganesh Shankar Vidyarthi and Karmveer by Makhanlal Chaturvedi became milestones in the history of Hindi journalism. The spiritual magazine Kalyan, edited by Bhaiji Hanuman Prasad Poddar, also occupies a distinguished place in Hindi publishing.

The Department of Posts is pleased to issue a commemorative postage stamp on the completion of 200 years of Hindi journalism, marking this significant milestone and recognizing its contribution to literature, culture, and nation-building. The issuance of this stamp is a tribute to the rich legacy of Hindi journalism and its enduring role in enhancing public awareness, promoting linguistic development, and strengthening democratic discourse in India.

Credit:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Based on the content provided by the proponent

भारतीय डाक
India Post
डाक विभाग
Department of Posts

हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष
200 YEARS OF HINDI JOURNALISM

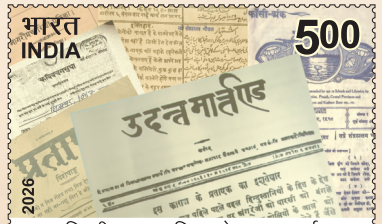

हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष
200 YEARS OF HINDI JOURNALISM

विवरणिका BROCHURE

हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष

भारत का प्रथम हिन्दी समाचार पत्र 'उदन्त मार्त्तण्ड', पहली बार 30 मई 1826 को कोलकाता से प्रकाशित हुआ था। देश की हिन्दी–भाषी जनता के हितों के संधान के उद्देश्य से शुरू किए गए इस समाचार पत्र के संपादक हिन्दी पत्रकारिता के प्रवर्तक युगल किशोर शुक्ल थे। 'उदन्त मार्त्तण्ड' ने समाचार और सूचनाओं को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का यह महती प्रयास ऐसे समय में आरंभ किया जब तमाम समाचार पत्र मुख्य रूप से अंग्रेजी, फारसी और बांग्ला में ही प्रकाशित होते थे। 'उदन्त मार्त्तण्ड' शीर्षक का अर्थ है –''समाचार का सूर्य'', जो आम नागरिकों में जागरूकता का प्रचार–प्रसार करने और उनको विज्ञ बनाने में पत्रकारिता की भूमिका को रेखांकित करता है।

यद्यपि, कोई बड़ा संरक्षक मौजूद न होने, डाक के माध्यम से वितरण सुविधा की अनुपस्थिति और पर्याप्त जन समर्थन न मिलने के कारण 'उदन्त मार्त्तण्ड' का प्रकाशन 4 दिसंबर 1827 को रोक दिया गया, किन्तु कहना न होगा कि तब तक यह सफलतापूर्वक भारत में हिन्दी पत्रकारिता की एक मजबूत नींव रख चुका था। विगत दो शताब्दियों में, हिन्दी पत्रकारिता ने भाषा, विषय की विविधता, मुद्रण–तकनीक और संचार प्रौद्योगिकी के मामले में काफी विकास किया है और इसके पाठकों की संख्या भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। हिन्दी पत्रकारिता ने जागरूक समाज का निर्माण करने के साथ–साथ आधुनिक हिन्दी गद्य तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उल्लेखनीय है कि हिन्दी पत्रकारिता की इस यात्रा में तमाम प्रतिष्ठित हस्तियों और प्रकाशनों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। जहाँ एक ओर भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिन्दी पुनर्जागरण का बीड़ा उठाया, वहीं बाबूराव विष्णु पराडकर ने हिन्दी पत्रकारिता की शब्दावली को समृद्ध करने का काम किया। इसके अलावा, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी गद्य का मानकीकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा संपादित 'प्रताप' तथा माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पादन में प्रकाशित होने वाले 'कर्मवीर' जैसे समाचार पत्रों ने हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में नए कीर्तिमान स्थापित किए। भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार द्वारा संपादित आध्यात्मिक पत्रिका 'कल्याण' भी हिन्दी प्रकाशन में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

डाक विभाग, हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और इस महत्वपूर्ण अवसर पर साहित्य, संस्कृति तथा राष्ट्र–निर्माण में हिन्दी पत्रकारिता के योगदान की सराहना करता है। यह डाक–टिकट हिन्दी पत्रकारिता की समृद्ध विरासत और जन जागरूकता पैदा करने एवं भाषा के विकास में इसके योगदान तथा भारत में लोकतांत्रिक संवाद को सुदृढ़ बनाने में इसकी महनीय भूमिका का प्रतीक है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रित डाक टिकटें	: 207100
Stamps Printed	: 207100
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00